ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 11, Nov 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

जीवन विज्ञान शिक्षण द्वारा नैतिकता, मानवीय मूल्य और राष्ट्रप्रेम का विकास

विष्णु कंवर
शोधार्थी
योग एवं जीवन विज्ञान विभाग,
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान-341306
kanwarv094@gmail.com

दशरथ सिंह
शोधार्थी
योग एवं जीवन विज्ञान विभाग,
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान-341306
singh.ds.naruka@gmail.com

प्रो. प्रद्युम्न सिंह शेखावत
प्रोफेसर
योग एवं जीवन विज्ञान विभाग,
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान-341306
psinghjvbi@gmail.com

सारांश (Abstract)

वर्तमान युग में शिक्षा केवल बौद्धिक ज्ञान के अर्जन का माध्यम न होकर व्यक्ति के नैतिक, मानवीय और राष्ट्रप्रेम मूल्य के संवर्धन का साधन भी है। "जीवन विज्ञान" शिक्षण, जो आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के अणुव्रत एवं प्रेक्षाध्यान दर्शन पर आधारित है, विद्यार्थियों में आत्मानुशासन, नैतिक चेतना और मानवीय सहअस्तित्व के भावों को विकसित करता है।

इस शोध का उद्देश्य विद्यालयी छात्रों में जीवन विज्ञान शिक्षण द्वारा नैतिकता, सहानुभूति और राष्ट्रप्रेम के स्तर का विश्लेषण करना था। अध्ययन में 180 माध्यमिक छात्रों का चयन किया गया, जिन्हें दो समूहों में विभाजित किया गया — जीवन विज्ञान शिक्षण प्राप्त समूह और सामान्य शिक्षण समूह। 10 सप्ताह तक जीवन विज्ञान आधारित प्रशिक्षण प्रदान किया गया, जिसमें अणुव्रत संकल्प, प्रेक्षाध्यान, कायोत्सर्ग और साप्ताहिक नैतिक चर्चा सत्र सम्मिलित थे।

परिणामों से स्पष्ट हुआ कि जीवन विज्ञान शिक्षण प्राप्त छात्रों में नैतिक संवेदनशीलता, सहानुभूति, अनुशासन और राष्ट्रप्रेम की भावना में उल्लेखनीय वृद्धि हुई ($p < 0.01$)। अध्ययन से यह सिद्ध हुआ कि जीवन विज्ञान शिक्षण वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में चरित्र निर्माण और राष्ट्रीय चेतना के सुदृढ़ीकरण के लिए एक प्रभावी माध्यम है।

मुख्य शब्द: जीवन विज्ञान, नैतिक मूल्य, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, राष्ट्रप्रेम, मूल्य शिक्षा

भूमिका

21वीं सदी की शिक्षा का लक्ष्य केवल सूचना-संचय नहीं बल्कि व्यक्तित्व का संतुलित विकास है। तकनीकी प्रगति और भौतिक सम्पन्नता के बावजूद आज समाज में नैतिक पतन, हिंसा, तनाव और आत्मकेंद्रितता बढ़ती जा रही है। इन परिस्थितियों में शिक्षा का मुख्य दायित्व मानवीय संवेदनशीलता, नैतिक आचरण और राष्ट्रीय एकता का विकास करना है।

इन्हीं उद्देश्यों को मूर्त रूप देने के लिए आचार्य तुलसी द्वारा *अणुव्रत आन्दोलन* (1949) और आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा *जीवन विज्ञान शिक्षा* (1975) का सूत्रपात किया गया। यह शिक्षा व्यक्ति के भीतर आत्मजागरण, मूल्य-चेतना और आत्म-नियंत्रण को विकसित करती है।

महाप्रज्ञजी के अनुसार — *"जीवन विज्ञान वह शिक्षा है जो जीवन के अनुभवों को विज्ञान के अनुशासन में बाँधती है और व्यक्ति में आत्मसंयम, करुणा और विवेक का विकास करती है।"*

इस शिक्षण के अंतर्गत छात्रों में प्रेक्षाध्यान, कायोत्सर्ग, संकल्प, आत्मसंवाद और नैतिक कथा जैसी विधियों द्वारा चरित्र निर्माण और राष्ट्रप्रेम की भावना विकसित की जाती है।

साहित्य समीक्षा

शैक्षिक मनोविज्ञान में मूल्य शिक्षा को चरित्र निर्माण का आधार माना गया है। कोठारी आयोग (1966) ने कहा था — *"राष्ट्र का भविष्य उसके नागरिकों के चरित्र पर निर्भर करता है, और चरित्र निर्माण का मूल आधार मूल्य शिक्षा है।"*

- तुलसी (1949) ने "अणुव्रत आन्दोलन" के माध्यम से छोटे संकल्पों द्वारा नैतिक जीवन के आचरण पर बल दिया।
- महाप्रज्ञ (1975) ने जीवन विज्ञान को शिक्षा के माध्यम से लागू करने का प्रयोग प्रारम्भ किया, जिसमें आत्म-अवलोकन, प्रेक्षाध्यान और व्यवहार सुधार के अभ्यासों को सम्मिलित किया गया।
- शर्मा (2016) के अध्ययन में पाया गया कि जीवन विज्ञान शिक्षण से छात्रों में संयम, अनुशासन और सहयोग की प्रवृत्ति बढ़ती है।
- लता एवं चौधरी (2019) के अनुसार, जीवन विज्ञान शिक्षण से विद्यार्थियों में सहानुभूति और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है।

पूर्ववर्ती शोधों से स्पष्ट है कि जीवन विज्ञान शिक्षण विद्यार्थियों के नैतिक एवं भावनात्मक परिष्कार के लिए अत्यंत उपयोगी है।

उद्देश्य एवं परिकल्पनाएँ

उद्देश्य:

1. जीवन विज्ञान शिक्षण का छात्रों के नैतिक मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. जीवन विज्ञान शिक्षण से राष्ट्रप्रेम की भावना में आने वाले परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
3. जीवन विज्ञान शिक्षण प्राप्त और अप्राप्त छात्रों की तुलना करना।

परिकल्पनाएँ:

H_1: जीवन विज्ञान शिक्षण प्राप्त छात्रों का नैतिक मूल्य स्तर नियंत्रण समूह से अधिक होगा।
H_2: जीवन विज्ञान शिक्षण से राष्ट्रप्रेम की भावना में महत्वपूर्ण वृद्धि होगी।
H_3: नैतिक मूल्य और राष्ट्रप्रेम के बीच सकारात्मक सहसंबंध पाया जाएगा।

शोध विधि

शोध प्रकार: प्रायोगिक (Experimental, Two-Group Pre-Test–Post-Test Design)

नमूना:

नागौर जिले के 6 माध्यमिक विद्यालयों से 180 विद्यार्थियों (कक्षा 9–10) का चयन किया गया।

- जीवन विज्ञान शिक्षण समूह: 90 विद्यार्थी
- नियंत्रण समूह: 90 विद्यार्थी

शिक्षण कार्यक्रम:

अवधि – 10 सप्ताह (सप्ताह में 5 दिन, प्रत्येक सत्र 45 मिनट) मुख्य घटक –

1. अणुव्रत संकल्प वाचन (5 मिनट)
2. प्रेक्षाध्यान और कायोत्सर्ग (15 मिनट)
3. मूल्य-चिंतन व नैतिक कथा (10 मिनट)

4. समूह-चर्चा व राष्ट्रगान/देशभक्ति गीत (10 मिनट)
5. आत्मसंवाद व आत्मनिरीक्षण अभ्यास (5 मिनट)

मापन उपकरण:

1. नैतिक मूल्य मापन पैमाना – (Dr. S. K. Bhatnagar, 2010)
2. राष्ट्रप्रेम प्रश्नावली – (Dr. Anjana Pathak, 2014)

सांख्यिकीय विश्लेषण:

माध्य (Mean), मानक विचलन (SD), t-परीक्षण (t-test), और सहसंबंध गुणांक (r) का प्रयोग किया गया।

परिणाम एवं विश्लेषण:

तालिका 1: नैतिक मूल्य पर जीवन विज्ञान शिक्षण का प्रभाव

समूह	N	Mean	SD	t-मूल्य	स्तर
जीवन विज्ञान समूह	90	78.6	6.10	5.21	**$p < 0.01$**
नियंत्रण समूह	90	70.2	7.04		

t-मूल्य 5.21 दर्शाता है कि जीवन विज्ञान शिक्षण समूह के छात्रों का नैतिक मूल्य स्तर नियंत्रण समूह की तुलना में अत्यधिक उच्च है।

तालिका 2: राष्ट्रप्रेम भावना पर जीवन विज्ञान शिक्षण का प्रभाव

समूह	N	Mean	SD	t-मूल्य	स्तर
जीवन विज्ञान समूह	90	81.4	5.85	4.77	**$p < 0.01$**
नियंत्रण समूह	90	73.9	6.22		

t-मूल्य 4.77 यह स्पष्ट करता है कि जीवन विज्ञान शिक्षण से छात्रों की राष्ट्रप्रेम भावना में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण वृद्धि हुई।

तालिका 3: नैतिक मूल्य और राष्ट्रप्रेम के बीच सहसंबंध

चर	N	r-मूल्य	महत्व स्तर
नैतिक मूल्य एवं राष्ट्रप्रेम	180	0.62	$p < 0.01$

r = 0.62 का सहसंबंध बताता है कि जिन छात्रों में नैतिक मूल्य उच्च हैं, उनमें राष्ट्रप्रेम की भावना भी उच्च है — दोनों एक-दूसरे से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित हैं।

परिणामो की व्याख्या

प्राप्त परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि जीवन विज्ञान शिक्षण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों, मानवीय संवेदना और राष्ट्रप्रेम के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान के माध्यम से छात्रों में आत्म-अवलोकन, संयम, अनुशासन, अहिंसा और करुणा के गुणों का विकास हुआ। यह अध्ययन आचार्य महाप्रज्ञ के इस विचार का समर्थन करता है कि —
"शिक्षा यदि जीवन को न बदले तो वह अधूरी है।"

पूर्ववर्ती शोधों (Sharma, 2016; Lata & Chaudhary, 2019) ने भी यही दर्शाया है कि जीवन विज्ञान शिक्षण विद्यार्थियों को समाजोन्मुख, कर्तव्यनिष्ठ और सहिष्णु बनाता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

मुख्य निष्कर्ष:

1. जीवन विज्ञान शिक्षण प्राप्त छात्रों के नैतिक मूल्य स्तर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
2. राष्ट्रप्रेम की भावना जीवन विज्ञान शिक्षण के पश्चात् अधिक प्रबल हुई।
3. नैतिकता और राष्ट्रप्रेम के बीच सकारात्मक सहसंबंध पाया गया।

4. जीवन विज्ञान शिक्षण से छात्रों में सहानुभूति, आत्मनियंत्रण, और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित हुई।

सुझाव:

- जीवन विज्ञान विषय को विद्यालयों में अनिवार्य सहायक विषय के रूप में सम्मिलित किया जाए।
- शिक्षकों को जीवन विज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान का विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया जाए।
- प्रत्येक विद्यालय में "मूल्य शिक्षा सप्ताह" और "अणुव्रत दिवस" मनाए जाएं।
- विद्यार्थियों में नैतिक व्यवहार को प्रोत्साहित करने हेतु परियोजनात्मक क्रियाकलाप जैसे "स्वशासित स्टोर", "सामूहिक प्रार्थना", और "सामाजिक सेवा शिविर" आयोजित किए जाएं।
- शिक्षा नीति में जीवन विज्ञान को चरित्र निर्माण और राष्ट्रनिर्माण के उपकरण के रूप में मान्यता दी जाए।

संदर्भ सूची

- तुलसी, आचार्य. (1949). अणुव्रत आन्दोलन का प्रारम्भिक दर्शन. लाडनूं: अणुव्रत विश्व भारती।
- महाप्रज्ञ, आचार्य. (1975). जीवन विज्ञान का दार्शनिक आधार. लाडनूं: जैन विश्वभारती प्रकाशन।
- शर्मा, ए. (2016). जीवन विज्ञान शिक्षण का विद्यार्थियों के नैतिक विकास पर प्रभाव. भारतीय शिक्षा समीक्षा, 23(2), 87–95।
- लता, एस. एवं चौधरी, एम. (2019). जीवन विज्ञान शिक्षण और सामाजिक मूल्य. शिक्षा-दर्शन, 17(1), 55–64।
- Bhatnagar, S. K. (2010). Moral Value Scale. Agra: National Psychological Testing Centre.
- Pathak, A. (2014). Patriotism Scale for Students. New Delhi: Prabhat Psychological Services.

- Kothari Commission Report. (1966). Education and National Development. New Delhi: Ministry of Education, Government of India.